उदात्त सिद्धान्त

प्रसिद्ध यूनानी विद्वान लोंजाइनस को 'उदात्त सिद्धान्त' का प्रवर्तक माना जाता है। उदात्त को ~~अर्थात्~~ परिभाषित करते लोंजाइनस ने कहा है - " उदात्त अभिव्यंजना का अनिर्वचनीय प्रकर्ष और वैशिष्ट्य है।" उदात्त का प्रभाव अनुनय में नहीं बल्कि सम्मोहन में उद्घाटित होता है। उदात्त सबको सम्पूर्णतः सम्मोहित करता है और उसका प्रभाव आकस्मिक होता है। उदात्त ही वह साधन है जिसके माध्यम से महान कवियों और इतिहासकारों ने ~~का~~ उत्कृष्ट ख्याति व ~~यश~~ अक्षय यश अर्जित किया है।

लोंजाइनस उदात्त की उत्पत्ति के लिए केवल प्रतिभा को ही पर्याप्त नहीं मानते, उसके साथ ज्ञान (व्युत्पत्ति) को भी आवश्यक ~~व~~ मानते हैं। अर्थात उदात्त नैसर्गिक ही नहीं उत्पाद्य भी है। ~~सम~~ प्रतिभा के अतिरिक्त ज्ञान व श्रम से भी इसकी सृष्टि संभव है।

उदात्त के अवरोधक दोष

उदात्त के मुख्यतः तीन अवरोधक दोष माने जाते हैं-

1- शब्दाडंबर

शब्दाडंबर उदात्तता प्रमुख अवरोधक दोष है। 'शब्दाडंबर उदात्तता के अतिक्रमण के साथ-साथ उसके प्रभाव को भी नष्ट कर देता है।

2 बालिशता

बालिशता या बचकानापन अप्रौढ़ता से बचकाना विस्तार है, जो रचना को जड़ बना देती है। रचना को असाधारण, आकर्षक बनाने के मोह में बालिशता से कृत्रिमता व प्रदर्शनप्रियता ही हाथ लगती है।

3- भावाडंबर

भावाडंबर या मिथ्याभाव अनावश्यक स्थान पर पोषित भावुकता ~~के कारण~~ का रूप है। अर्थात जहाँ भाव की भावुकता ~~के कारण~~ का रूप है। अर्थात जहाँ भाव को फैलाने से भावुक आवश्यकता नहीं वहाँ भी जबर्दस्ती भाव को फैलाने से भावाडंबर आ जाता है। अनपेक्षित, अनुचित भावातिरेक ही भावाडंबर है।

Scanned with CamScanner

उदात्त के तत्त्व

उदात्त के मुख्यतः पाँच तत्त्व हैं।

1. विचार की महत्ता

उदात्त के तत्त्वों में 'विचार की महत्ता' का विशेष स्थान है। विचार की महत्ता तब तक संभव नहीं है जब तक की वक्ता या लेखक आत्मा भी महान न हो। औदात्य महान आत्मा की प्रतिध्वनि है।' महान आत्मा का अर्थ है कि व्यक्ति के आचार, विचार, व्यवहार सभी महान हो। महान विचार आदर्शों का अनुकरण भी विचार की महत्ता को प्रतिपादित करता है।

2 भाव की तीव्रता

महान विचारों के समान भव्य भावों का संबन्ध भी महान आत्माओं से है। भावों की महत्ता में भाव की सत्यता भी अन्तर्भूत होती है। इसलिए भावातिरेक से बचना चाहिए, ताकि भाव अविश्वसनीय न होने पाये। किसी भी वस्तु की अतिरंजना से अविश्वसनीयता उत्पन्न होती है और अविश्वसनीयता आह्लाद को बाधक होती है, अतः आवश्यक है कि भाव की मात्रा संतुलित हो भाव मौलिकपूर्ण होना चाहिए तथा उदात्त हमेशा हृदय भावों से युक्त होना चाहिए।

3 - अलंकार का समुचित प्रयोग

लोंजाइनस ने उदात्त के संदर्भ में अलंकारों को साधन के रूप में स्वीकार्यता प्रदान की है साध्य के रूप नहीं। साध्य उदात्त है अलंकार को साध्य मान लेने से कथ्य बोझिल हो जाता है। अतः अलंकार उदात्त के प्रभाव को तीव्र बनाने का साधन मात्र है। अलंकारों के अतिशय प्रयोग से बचना चाहिए। अलंकारों का प्रयोग तभी करना चाहिए जब वे अपरिहार्य हो।

4 पदयोजना की भव्यता

औदात्य के लिए उपयुक्त और मनोहारी पद अपेक्षित है क्योंकि ऐसे ही पद श्रोताओं को आकृष्ट और आह्लादित करते हैं। इन्हीं से शैली में गरिमा, रमणीयता, प्रभावता, बलवत्ता, शक्ति या अन्य भी अपेक्षित गुण आते हैं। (बनावटी) शैली की अपेक्षा परिचित पदावली अधिक प्रभावशाली होती है। ये जीवन से सम्बन्धित होने के कारण अधिक सरल

5. रचना की गरिमा

इस शीर्षक के अन्तर्गत सम्यक् क्रम विन्यास पर बल दिया जाता है। पद कितना भी अच्छा हो, यदि उसका क्रम विन्यास अच्छे से नहीं तो वह सौन्दर्य की सृष्टि नहीं कर सकता है। इसमें मात्र पद विन्यास के कौशल का ही वर्णन नहीं है, अपितु शेष चारों तत्वों के सामंजस्य व संतुलन का महत्व प्रतिपादित है। जब तक ये ~~अंगा~~ अंगांगिभाव से संयोजित नहीं होते, तब तक उदात्त के साधक नहीं बन सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1- पाश्चात्य काव्य शास्त्र - डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा

2- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा - डॉ० रामचन्द्र तिवारी

3- भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्र - डॉ० अर्चना श्रीवास्तव

Scanned with CamScanner